हज़रत

मुहम्मद (स)

की कही हुई अनमोल बातें

(40 हदीसों का संकलन)

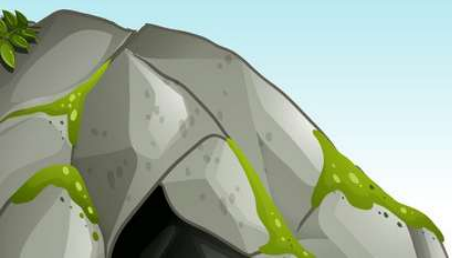

हज़रत

मुहम्मद (स)

की कही हुई अनमोल बातें

(40 हदीसों का संकलन)

बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम

हज़रत मुहम्मद(स.) की ज़िन्दगी एक नज़र में

हज़रत मुहम्मद(स.) सन 570 ई0 में अरब के मक्का नामी शहर में पैदा हुए थे। उनके वालिद (पिता) हज़रत मुहम्मद(स.) की पैदाइश से पहले ही दुनिया से चल बसे थे। फिर जब हज़रत मुहम्मद(स.) छः साल के हुए तो उनकी माँ भी चल बसीं। उसके बाद दो साल तक उनके दादा ने पाला। जब वो भी इस दुनिया से चले गये तो उनके चचा अबू तालिब ने उनकी परवरिश की ज़िम्मेदारी ले ली। अबू तालिब अपने यतीम भतीजे को अपने बेटों से भी ज़्यादा चाहते थे।

हज़रत मुहम्मद(स.) के चचा अबू तालिब एक व्यापारी थे। एक साल जब अबू तालिब ने सीरिया जाने का इरादा किया तो हज़रत मुहम्मद(स.) ने उनके साथ जाने की ख़्वाहिश ज़ाहिर की तो अबू तालिब ने उन्हें भी साथ ले लिया। उस वक़्त हज़रत मुहम्मद(स.) की उम्र लगभग बारह साल थी। रास्ते में एक ईसाई सन्यासी की निगाह हज़रत मुहम्मद(स.) पर पड़ी तो उसने अबू तालिब से कहाः तुम्हारे इस बच्चे का मुस्तक़बिल (भविश्य) बहुत रौशन है। ये वही पैग़म्बर है जिसकी ख़बर तौरैत और इन्जील (दिव्य ग्रंथों) में दी गई है। तुम इसे दुश्मन की निगाहों से बचाकर रखो। अगर यहूदी क़ौम ने इसे देख लिया और पहचान लिया तो वो इसे क़त्ल करने की साज़िश ज़रूर रचेंगे। उस ईसाई सन्यासी की ये बातें सुनते ही अबू तालिब अपने भतीजे को लेकर फ़ौरन मक्का लौट आए और फिर कभी कोई सफ़र नहीं किया बल्कि रात–दिन भतीजे की हिफ़ाज़त में लग गए।

बचपन से ही हज़रत मुहम्मद(स.) अपने हम–उम्र बच्चों के बीच 'सच्चे' मशहूर हो गये थे। मक्के के बच्चे हों या बूढ़े सब उनको 'सादिक़' यानी सच्चा कहकर पुकारते थे। हज़रत मुहम्मद(स.)

ने नौजवानी में क़दम रखा तो मक्के वाले उनके पास अपनी अमानतें भी रखवाने लगे। उधर हज़रत मुहम्मद(स.) भी लोगों की अमानतों को जैसा–का–तैसा उन्हें वापस लौटाते। नतीजतन लोग उन्हें 'अमीन' (यानी अमानतदार) कहकर पुकारने लगे।

उस ज़माने में मक्का में ख़दीजा नामी एक नेक और रहमदिल औरत रहती थीं। ख़दीजा बहुत पैसे वाली थीं और उनका शुमार मक्के के मशहूर ताजिरों (व्यापारियों) में होता था। अबू तालिब अक्सर उनके तिजारती क़ाफ़िले के सरदार हुआ करते थे। एक बार किसी ने ख़दीजा को बताया कि अबू तालिब का भतीजा मुहम्मद(स.) इन दिनों मक्का में बहुत मशहूर हो रहा है। वो अपनी सच्चाई और अमानतदारी के लिये हर तरफ़ जाना जाता है। ये सुनकर ख़दीजा ने फ़ैसला किया कि वो हज़रत मुहम्मद(स.) को भी अपने तिजारती क़ाफ़िले में शामिल करेंगी। उन्होंने अबू तालिब से अपनी ख़्वाहिश ज़ाहिर की। अबू तालिब ने अपने भतीजे को समझाया कि ये बहुत अच्छा मौक़ा है इसलिये वो ख़दीजा के तिजारती क़ाफ़िले में शामिल होने के लिये हाँ कह दें। हज़रत मुहम्मद(स.) ने चचा का कहना मान लिया। ख़दीजा ने मैसरह नामी अपने एक गुलाम को हज़रत मुहम्मद(स) के साथ रवाना कर दिया। जब हज़रत मुहम्मद(स.) सीरिया के उस सफ़र से वापस आए तो पता चला कि ख़दीजा को तिजारत (व्यापार) में पहले के मुक़ाबले दो गुना फ़ायदा हुआ है। ख़दीजा को मैसरह ने बताया कि मुहम्मद(स.) बहुत गैर–मामूली (असाधारण) शख़्सियत के हामिल हैं।

जब ख़दीजा को हज़रत मुहम्मद(स) में पाई जाने वाली ख़ूबियों का पता चला तो उन्होंने हज़रत मुहम्मद(स.) के पास किसी को भेजकर उनसे शादी का पैग़ाम पहुँचवाया। हज़रत मुहम्मद(स.) ने कहा कि वो इस बारे में अपने चचा अबू तालिब से पूछ कर बताएंगे। अबू तालिब ने

उन्हें सलाह दी कि वो इस पेशकश को क़ुबूल कर लें। इसलिये हज़रत मुहम्मद(स.) ने हाँ कर दी। फिर अबू तालिब ने दोनों का निकाह पढ़ा। शादी के वक़्त हज़रत मुहम्मद(स) की उम्र 25 साल थी। जबकि ख़दीजा की उम्र 40 साल मशहूर है।

इस शादी के नतीजे में अल्लाह ने हज़रत मुहम्मद(स) को दो बेटे अता किये। मगर ये दोनों ही बेटे बचपन में चल बसे। जहाँ तक बेटियों का सवाल है तो तारीख़ (इतिहास) में दो तरह की बातें लिखी हैं। कहीं उनकी तादाद चार और कहीं एक लिखी है। मगर क़ुरआन, हदीस व तारीख़ की किताबों से जो बात ज़्यादा सही नज़र आती है वो ये कि ख़दीजा(अ.) की कोख से हज़रत मुहम्मद(स.) की एक ही बेटी पैदा हुई थी जिसका नाम फ़ातिमा(अ.) था।

हज़रत मुहम्मद(स.) अकसर मक्का के नज़दीक हिरा नामी एक ग़ार (गुफ़ा) में अल्लाह की इबादत किया करते थे। जब उनकी उम्र 40 साल हुई तो अचानक एक दिन ग़ारे हिरा में एक फ़रिश्ता इन्सानी शक्ल में उनके सामने ज़ाहिर हुआ। उसने हज़रत मुहम्मद(स.) से कहाः पढ़िये। हज़रत मुहम्मद(स.) ने उससे पूछाः क्या पढ़ूँ? उस फ़रिश्ते ने कहा, ''पढ़िये, अपने रब के नाम से जिसने (सारी कायनात को) पैदा किया है....''। फिर हज़रत मुहम्मद(स.) ने वो 5 जुम्ले (वाक्य) पढ़े जो फ़रिश्ते ने उनसे कहलवाए थे। फ़रिश्ते ने हज़रत मुहम्मद(स.) से ये भी कहा कि आप अल्लाह के पैग़म्बर हैं और मैं जिबरील हूँ। क़ुरआन कुछ और नहीं बल्कि 23 बरसों में हज़रत मुहम्मद(स.) के पास आने वाले ख़ुदाई पैग़ामों का मजमूआ (संग्रह) है।

इस वाक़िये के बाद हज़रत मुहम्मद(स.) ग़ारे हिरा से लौटकर घर वापस आए तो उन्होंने सारी आपबीती अपनी बीवी ख़दीजा(अ.) को सुनाई। जब दिन ढला तो अस्र का वक़्त आया। चूँकि

उस वक़्त तक अली(अ.) व ख़दीजा(अ.) अपने ईमान का ऐलान कर चुके थे इसलिये अस्र की नमाज़ तीनों ने जमाअत से एक साथ पढ़ी।

तीन साल बाद उन्हें हुक्म हुआ कि वो अपने ख़ानदान वालों को अल्लाह के रास्ते की तरफ़ बुलाएँ। नतीजतन हज़रत मुहम्मद(स.) ने एक दावत का इन्तेज़ाम किया और अपने ख़ानदान के क़रीब 40 लोगों को जमा किया। उस दावत में हज़रत मुहम्मद(स.) ने खड़े होकर सबसे कहाः अल्लाह ने मुझे तुम्हारी रहनुमाई का हुक्म दिया है। तो तुममें से कौन है जो इस काम में मेरी मदद करे? तुममें से कौन है जो मेरा हाथ बटाकर मेरा भाई, मेरा ख़लीफ़ा (उत्तराधिकारी) और मेरा वसी (वो इन्सान जिसके नाम वसीयत की जाए) बने? जब किसी ने कोई जवाब नहीं दिया तो अली(अ.) बोलेः मैं आपका मददगार बनने को तैयार हूँ। ये सुनकर हज़रत मुहम्मद(स.) ने अली(अ.) की गर्दन पर हाथ रखा और कहाः ये मेरा भाई, मेरा ख़लीफ़ा और मेरा वसी है तुम लोग इसकी बात मानना। तारीख़ में इस दावत को 'दावते ज़ुलअशीरह' के नाम से याद किया जाता है।

फिर जब हज़रत मुहम्मद(स.) अपने ख़ानदान वालों के बीच अपने पैग़म्बर होने का ऐलान कर चुके तो एक दिन अल्लाह की तरफ़ से उनके पास क़ुरआन की ये आयत आई कि 'जिस चीज़ का आपको हुक्म दिया जा चुका है उसे खुलेआम सुना दीजिये और मुशरिकों की परवाह मत कीजिये'। नतीजतन वो मक्का में 'अबतह' नामी जगह पर खड़े हुए ओर लोगों से बोलेः मैं अल्लाह का भेजा पैग़म्बर हूँ। तुम्हें एक ख़ुदा की इबादत की तरफ़ बुलाता हूँ और उन मूर्तियों की पूजा छोड़ने के लिये कहता हूँ जो न फ़ायदा पहुँचाती हैं न नुक़सान, न कोई चीज़ पैदा करती हैं और न किसी को रोज़ी–रोटी देती हैं। ये सुनकर मक्का के मुशरिकों (मूर्तिपूजा करने वालों) ने पहले तो हज़रत

मुहम्मद(स.) का मज़ाक़ उड़ाया फिर उनके चचा अबू तालिब से कहाः तुम्हारे भतीजे ने हमारे ख़ुदाओं को बुरा–भला कहा है और हमारे बुज़ुर्गों को गुमराह जाना है। मुनासिब तो यही होगा कि वो ऐसा कहना छोड़ दे। बदले में अगर वो चाहे तो हम उसे बहुत सारा माल देने को तैयार हैं। जब हज़रत मुहम्मद(स.) ने लोगों को एक ख़ुदा की तरफ़ बुलाना बन्द नहीं किया तो मक्का के मुशरिकों ने उन्हें और उनके साथियों को सताना शुरू कर दिया। मगर हज़रत मुहम्मद(स.) ने अपने साथियों से कह रखा था कि वो किसी का कोई जवाब न दें यहाँ तक कि ज़ुल्म करने वाले का हाथ भी न पकड़ें।

फिर भी मुशरिकों का मक़सद पूरा न हुआ तो उन्होंने पहाड़ के एक दर्रे में तमाम मुसलमानों और ख़ुद हज़रत मुहम्मद(स.) को घेर दिया और फिर तीन साल तक उन पर हर तरह की पाबन्दी लगाए रखी। इन तमाम ज़ुल्मों से तंग आकर हज़रत मुहम्मद(स.) मक्का छोड़कर मदीना चले गये। तब भी मूर्ति पूजा करने वाले लोग चैन से नहीं बैठे। और अपनी फ़ौज तैयार करके हज़रत मुहम्मद(स.) व उनके साथियों से लड़ने मदीना आ पहुँचे। और फिर एक जंग नहीं बल्कि कई जंगों की झड़ी लगा दी।

उस दौर के अरब लोग बहुत झगड़ालू और ख़ूँख़ार थे। वो बात–बात पर जंग करने और मरने–मारने को तैयार हो जाते थे। कभी–कभी तो एक छोटी सी बात पर होने वाली जंग बरसों चलती थी। कुछ तो ऐसे भी थे जो बेटी के पैदा होते ही उसे मार डालते थे। लोग गन्दी आदतों, बुरे रस्म व रिवाज और वहमी बातों (अंधविश्वास) में फँसे हुए थे।

सबसे पहला काम जो हज़रत मुहम्मद(स.) ने अन्जाम दिया वो ये था कि लोगों को बुत–परस्ती (मूर्तिपूजा) और सितारा–परस्ती (ग्रहपूजा) और आतिश–परस्ती (अग्निपूजा) से

निकालकर एक निराकार ख़ुदा की इबादत पर लगाया। उन्होंने लोगों को बताया कि इस कायनात को बनाने वाले ख़ुदा (अल्लाह) के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं है। इसलिये हमें सिर्फ़ उसके सामने सर झुकाना चाहिये और उसके हुक्मों को मानना चाहिये।

उन्होंने लोगों को ये भी बताया कि तमाम इन्सान बराबर हैं। कोई किसी से ऊँचा या नींचा नहीं है, न तो रंग की बुनियाद पर, न ज़ात–पात, न ख़ानदान व क़बीले की बुनियाद पर। किसी इन्सान को किसी दूसरे इन्सान का ख़ून बेजा बहाने का हक़ नहीं है। यही नहीं, हज़रत मुहम्मद(स.) ने अरब के अलग–अलग क़बीले के लोगों का हाथ आपस में मिलाकर उनसे कहा कि आज से तुम लोग आपस में भाई हो। औरतों और बच्चियों के सिलसिले में हज़रत मुहम्मद(स.) अक्सर अरबों को नेकी की ताकीद किया करते थे। जहाँ तक अरबों के रहन–सहन और खाने–पीने का ताल्लुक़ है तो उसे भी इस्लाम ने पूरी तरह बदल दिया। हज़रत मुहम्मद(स.) ने लोगों को सलाम करने से लेकर पहनने–ओढ़ने, बोलने–चालने, खाने–पीने और सोने–जागने से जुड़े हज़ारों क़ानून दिये जिसे अपनाकर बाद में वो लोग तहज़ीब–याफ़्ता (शिश्ट और सभ्य) कहलाए।

हिजरत (मदीने की तरफ़ प्रवास) का दसवाँ साल था जब अल्लाह के हुक्म से हज़रत मुहम्मद(स.) ने हज को अन्जाम देने का इरादा किया। वो अपने कुछ साथियों के साथ मदीना से मक्का गए। हज ख़त्म हुआ तो हज़रत मुहम्मद(स.) ने मदीना वापसी का इरादा किया। अभी हज़रत मुहम्मद(स.) दूसरे मुसलमानों के साथ मक्का से निकलकर 'राबिग़' नामी सरज़मीन से गुज़रते हुए एक प्याले नुमा मैदान (जिसका नाम ग़दीरे खुम था) में पहुँचे थे कि अल्लाह की तरफ़ से एक फ़रिश्ता क़ुरआन की एक आयत लेकर आ गया जिसमें हज़रत मुहम्मद(स.) से कहा गया था कि 'ऐ

पैग़म्बर! जो पैग़ाम आपके रब की तरफ़ से आप तक आ चुका है उसे (लोगों तक) पहुँचा दीजिये। और अगर आपने ऐसा नहीं किया तो (समझिये) आपने पैग़म्बरी का काम अन्जाम नहीं दिया'। इस आयत के आते ही हज़रत मुहम्मद(स.) उसी मुक़ाम पर ठहर गये। जो लोग आगे चले गये थे उन्हें वापस बुलाया गया, जो पीछे रह गये थे उनका इन्तेज़ार किया गया। जब सब जमा हो गये तो ऊँटों के हौदों को एक के ऊपर रखकर मिम्बर (एक तरह का मंच) बनाया गया। फिर उसके ऊपर खड़े होकर हज़रत मुहम्मद(स.) ने एक लम्बी तक़रीर की। फिर हज़रत मुहम्मद(स.) ने हज़रत अली(अ.) का हाथ अपने हाथ में लिया और उसे बुलन्द करके लोगों से कहाः ऐ लोगों! जिस–जिस का मैं मौला हूँ उसके ये अली मौला हैं (मतलब ये था कि जिस–जिस शख़्स पर मैं अधिकार रखता हूँ उस–उस पर मेरे बाद अली(अ.) अधिकार रखेंगे)। लिखा है कि जैसे ही हज़रत मुहम्मद(स) ने अपनी बात पूरी की फ़ौरन अल्लाह की तरफ़ से क़ुरआन की आयत आ गई। जिसमें अल्लाह ने फ़रमाया था कि '(ऐ लोगों!) आज मैंने तुम्हारे लिये तुम्हारे दीन (इस्लाम) को मुकम्मल (यानी पूरा) कर दिया और तुम पर अपनी नेमत पूरी कर दी और (आज) मैं तुम्हारे लिये दीन के तौर पर इस्लाम से राज़ी हो गया।

मोतबर किताबों में हज़रत मुहम्मद(स.) के इन्तेक़ाल (निधन) की तारीख़ 28 सफ़र सन् 11 हिजरी बताई गई है। इस तरह 63 साल तक दुनिया में अपने नूर की किरनें फैलाने के बाद वो सूरज इस दुनिया से रुख़सत हो गया।

–– शाहिद हुसैन (मीसम) की किताब 'हज़रत मुहम्मद(स.)' से

इंसान पर माँ का हक़

हज़रत मुहम्मद(स) ने कहाः

औरत पर सबसे बड़ा हक़
उसके शौहर का है और
मर्द पर सबसे बड़ा हक़
उसकी माँ को हासिल है।

(नहजुल फ़साहा, सफ़हाः221)

पड़ोसी की अहमियत

हज़रत मुहम्मद(स) ने कहाः

वो इंसान क़यामत तक मोमिन (ईमान वाला) नहीं हो सकता जो अपने पड़ोसी को तकलीफ़ पहुँचाता हो

(उयूने अख़बारुर्रिज़ा, जिल्दः2, सफ़हाः33)

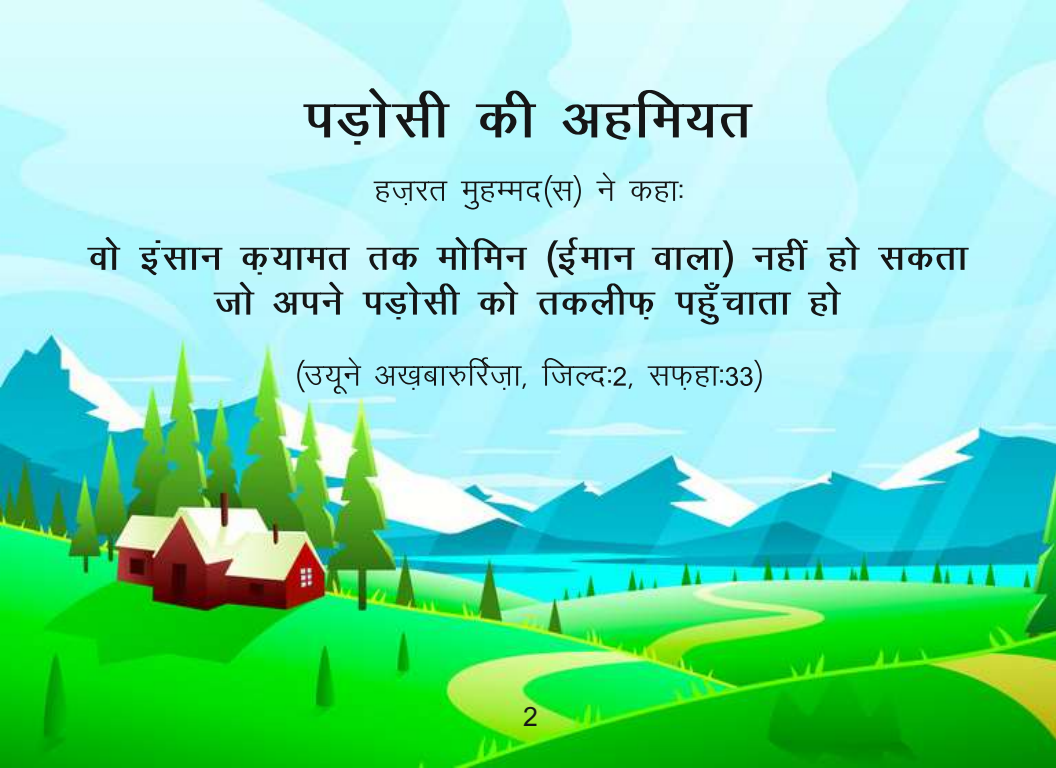

बेहतरीन काम

हज़रत मुहम्मद(स) ने कहाः

बेहतरीन काम तीन हैंः
दौलत के बावजूद तवाज़ो (विनम्रता)
ताक़त के बावजूद माफ़ करना
बिना जताए तोहफ़ा देना

(नहजुल फ़साहा, सफ़हाः227)

बच्चों को पालना

हज़रत मुहम्मद(स) ने कहाः

उन माँ बाप पर
अल्लाह का करम हो
जिन्होंने अपने बच्चों को
अच्छे रास्ते पर लगा रखा है

(वसाएलुश्शीआ, जिल्दः15, सफ़हाः199)

अपना बोझ दूसरे पर डालना

हज़रत मुहम्मद(स) ने कहाः

जो शख़्स अपना बोझ दूसरे पर डाल दे वह लानती है

(बिहारुल अनवार, जिल्दः77, सफ़हाः140, हदीसः20)

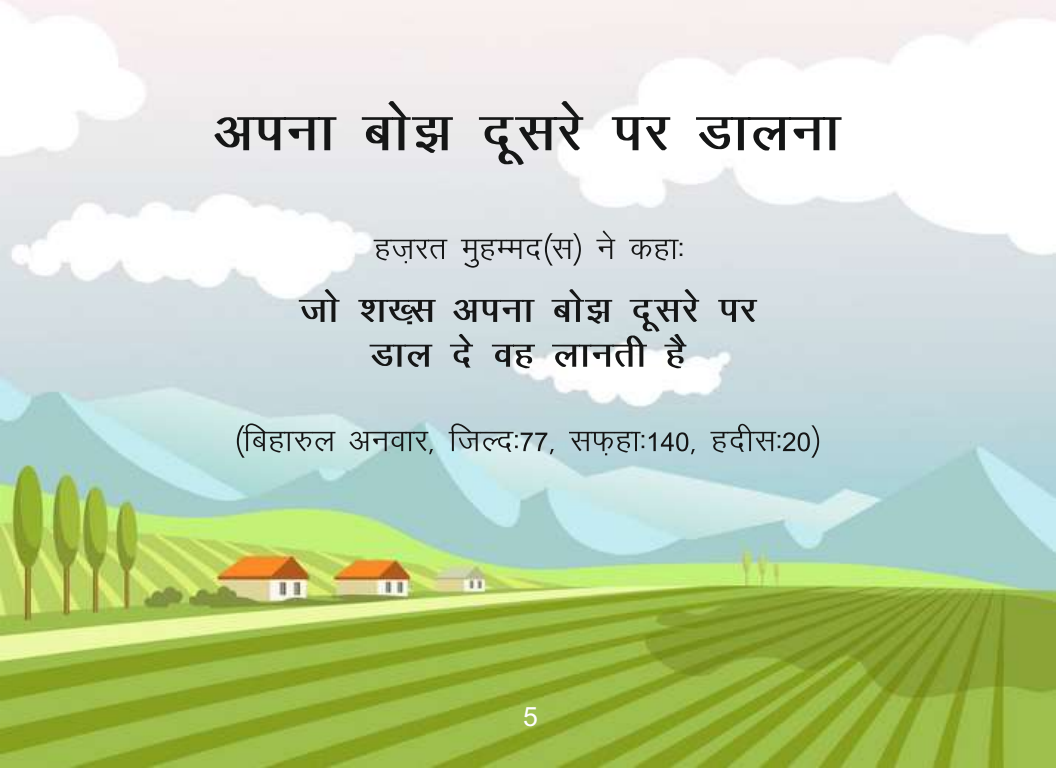

जहन्नुम में रहने वाले

हज़रत मुहम्मद(स) ने कहाः

ऐ अबूज़र! (1) जहन्नुम में रहने वाले ज़्यादातर घमंड करने वाले होंगे।

(मुस्तद्रकुल वसाएल, जिल्दः12, सफ़हाः27)

(1) जो हज़रत मुहम्मद (स) के साथ रहते थे

बेख़बर कौन?

हज़रत मुहम्मद(स) ने कहाः

लोगों में सबसे ज़्यादा बेख़बर वो है जो दुनिया के उतार चढ़ाओ से सीख न ले

(नहजुल फ़साहा, सफ़हाः227)

जवानी में तौबा

हज़रत मुहम्मद(स) ने कहाः

गुनाहों से तौबा करना हमेशा अच्छा है लेकिन जवानी में तौबा करना बहुत ही अच्छा है।

(कन्ज़ुल उम्माल, जिल्दः15, सफ़हाः896)

माँ का दूध

हज़रत मुहम्मद(स) ने कहाः

बच्चे के लिये माँ के दूध से बेहतर कोई दूध नहीं

(उयूने अख़बारुर्रिज़ा, जिल्दः1, सफ़हाः38)

बुरा खाना

हज़रत मुहम्मद(स) ने कहाः

बुरा खाना उस दावत का खाना है जिसमें पेट भरों को बुलाया जाये लेकिन भूखों को न बुलाया जाये।

(कन्ज़ुल उम्माल, जिल्दः16, सफ़हाः307)

अच्छा काम

हज़रत मुहम्मद(स) ने कहाः

अल्लाह के नज़दीक अच्छा काम यह है कि ग़रीबों को खाना ख़िलायें, क़र्ज़दार के क़र्ज़ को अदा करें और उसके दुखों को दूर करें।

(कन्ज़ुल उम्माल, जिल्दः6, सफ़हाः342)

अल्लाह का पसन्दीदा

हज़रत मुहम्मद(स) ने कहाः

लोगों में अल्लाह का सबसे पसन्दीदा आदमी वह है जो लोगों के लिए सबसे ज़्यादा फ़ायदेमन्द हो

(बिहारुल अनवार, जिल्दः77, सफ़हाः152)

मुनाफ़िक़ (पाखण्डी) की पहचान

हज़रत मुहम्मद(स) ने कहाः

मुनाफ़िक़ (पखण्डी) की तीन पहचान है
1– झूट बोलना
2– वादे के ख़िलाफ़ करना,
3– अमानत में ख़ियानत (धोखा) करना।

(रौज़तुल मुत्तक़ीन जिल्दः12, सफ़हाः146)

बेहतरीन काम

हज़रत मुहम्मद(स) ने कहाः

ख़ुदा के नज़दीक बेहतरीन काम ज़बान पर क़ाबू रखना है

(नहजुल फ़साहा सफ़हाः168)

सबसे ज़्यादा अक़्लमन्द

हज़रत मुहम्मद(स) ने कहाः

लोगों में सबसे ज़्यादा अक़्लमन्द वह है
जो सबसे ज़्यादा ग़ुस्से पर क़ाबू रखता है

(अमाली उस्सुदूक़ सफ़हाः73)

रिश्वत

हज़रत मुहम्मद(स) ने कहाः

रिश्वत लेने वाला, रिश्वत देने वाला दोनो जहन्नमी हैं

(नहजुल फ़साहा, सफ़हाः 505)

बेहतरीन भाई

हज़रत मुहम्मद(स) ने कहाः

बेहतरीन भाई वो है जो तुम्हारे ऐब तुमको दिखाए

(नहजुल फ़साहा, सफ़हाः 470)

बेहतरीन जिहाद

हज़रत मुहम्मद(स) ने कहाः

बेहतरीन जिहाद ज़लिम बादशाह के सामने सच्चाई बयान करना है

(नहजुल फ़साहा, सफ़हाः229)

गाली का जवाब

हज़रत मुहम्मद(स) ने कहाः

गाली का जवाब गाली से न दो क्योंकि इसका नतीजा तुम्हारे लिये अच्छा और उसके लिये बुरा होगा

(नहजुल फ़साहा, सफ़हाः195)

लालच न करो

हज़रत मुहम्मद(स) ने कहाः

दुनिया को हासिल करने में लालच न करो क्योंकि हर आदमी को उसकी क़िस्मत के मुताबिक़ मिल जाता है।

(किताबुस्सुन्नह, जिल्दः1, सफ़हाः182)

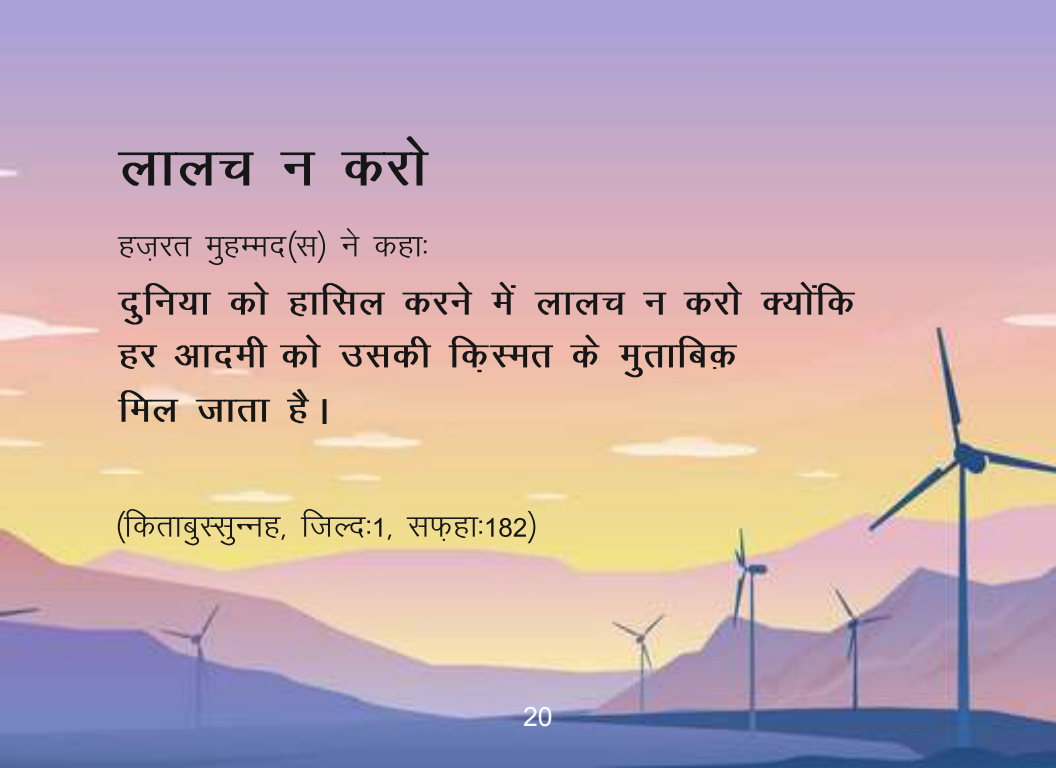

दुनिया में सज़ा

हज़रत मुहम्मद(स) ने कहाः

दो लोगों को दुनिया में ही सज़ा मिल जाती है।

1– जो ज़ुल्म करे

2– जो माँ–बाप को सताये

(नहजुल फ़साहा, सफ़हाः165)

मज़लूम की फ़रयाद

हज़रत मुहम्मद(स) ने कहाः

मज़लूम की फ़रयाद से डरो क्योंकि फ़रयाद आग की तरह आसमान तक जाती है।

(नहजुल फ़साहा, सफ़हाः163)

चालाकी

हज़रत मुहम्मद(स) ने कहाः

ईमानदार की होशयारी से डरो
क्योंकि वो ख़ुदा के नूर के ज़रिये देखता है।

(उसूले काफ़ी, जिल्दः1, सफ़हाः218)

बिल्डिन्ग में नाजाएज़ पत्थर

हज़रत मुहम्मद(स) ने कहाः

बिल्डिन्ग में नाजाएज़ पत्थर इस्तेमाल करने से बचो क्योंकि वह बिल्डिन्ग को बर्बाद कर देता है।

(नहजुल फ़साहा, सफ़हाः162)

ग़ुस्से का इलाज

हज़रत मुहम्मद(स) ने कहाः

ग़ुस्सा शैतान की तरफ़ से है और
शैतान आग से बना है और आग को पानी के ज़रिये बुझाते हैं
अगर तुम्हें ग़ुस्सा आये तो तुम वुज़ू करो।

(नहजुल फ़साहा, सफ़हाः286)

जल्दी राज़ी होना

हज़रत मुहम्मद(स) ने कहाः

लोगों में बेहतरीन इन्सान वह है जिसे देर में ग़ुस्सा आये और जल्दी राज़ी हो जाए।

(नहजुल फ़साहा, सफ़हाः243)

ईमान का सबसे बड़ा मर्तबा

हज़रत मुहम्मद(स) ने कहाः

ईमान का सबसे बड़ा मर्तबा यह है कि इस बात का ध्यान रहे कि तुम जहाँ कहीं भी हो ख़ुदा तुम्हारे साथ है।

(मीज़ानुल हिकमा, जिल्दः1, सफ़हाः198)

बेहतरीन ईमान और इस्लाम

हज़रत मुहम्मद(स) ने कहाः

बेहतरीन ईमान ये है कि लोग तुमसे अमान में रहें और बेहतरीन इस्लाम ये है कि लोग तुम्हारी ज़बान और हाथ से सलामत रहें

(नहजुल फ़साहा, सफ़हाः 214)

सफ़र करो

हज़रत मुहम्मद(स) ने कहाः

सफ़र करो ताकि सेहतमंद रहो और (दुनिया) से फ़ायदा उठा सको।

(नहजुल फ़साहा, सफ़हाः519)

ज़िन्दगी की ज़रूरतों को पूरा करना

हज़रत मुहम्मद(स) ने कहाः

अपनी ज़िन्दगी की ज़रूरतों को पूरा करना दुनिया से मुहब्बत की निशानी नहीं है।

(नहजुल फ़साहा, सफ़हाः773)

बीमारियों का इलाज

हज़रत मुहम्मद(स) ने कहाः

हमेशा सदक़ा (दान–पुण्य) देते रहो और अपनी बीमारियों का इलाज सदक़े के ज़रिये करो।

(मीज़ानुल हिकमा, जिल्दः6, सफ़हाः220)

जिहालत की ज़िल्लत

हज़रत मुहम्मद(स) ने कहाः

जो इल्म हासिल करने के लिये थोड़ी देर की तकलीफ़ बर्दाश्त नहीं कर सकता वो हमेशा जिहालत की ज़िल्लत और तकलीफ़ झेलेगा।

(बिहारुल अनवार, जिल्दः1, सफ़हाः177)

जन्नत में कौन जा नहीं सकता

हज़रत मुहम्मद(स) ने कहाः

कोई भी मक्कार और ख़यानत (धोखा)
करने वाला जन्नत में
जा नहीं सकता।

(मीज़ानुल हिकमा, जिल्दः2, सफ़हाः281)

बच्चों की अच्छी तरबियत

हज़रत मुहम्मद(स) ने कहाः

अपने बच्चों की इज़्ज़त करो उनकी अच्छी तरबियत करो ताकि ख़ुदा तुम्हारे (गुनाहों) को माफ़ करे।

(बिहारुल अनवार, जिल्दः104, सफ़हाः95)

नुक़सान न पहुँचाओ

हज़रत मुहम्मद(स) ने कहाः

न ख़ुद को नुक़सान पहुँचाओ न दूसरों को

(उसूले काफ़ी, जिल्द:5, सफ़हा:294)

रिज़्क़ (रोज़ी)

हज़रत मुहम्मद(स) ने कहाः

रिज़्क़ लोगों को ऐसे तलाश करता है
जैसे उसे उसकी मौत तलाश करती है

(बिहारुल अनवार, जिल्दः103, सफ़हाः33)

नापसन्द खाना

हज़रत मुहम्मद(स) ने कहाः

जो तुमको नापसन्द हो वो खाना ग़रीबों को न खिलाओ

(नहजुल फ़साहा, सफ़हाः 672)

अच्छा काम

हज़रत मुहम्मद(स) ने कहाः

हर अच्छा काम सदक़ा (दान) है।

(ख़िसाल, सफ़हाः134, हदीसः145)

तोहफ़ा (गिफ़्ट)

हज़रत मुहम्मद(स) ने कहाः

एक दूसरे को तोहफ़ा दो क्योंकि
तोहफ़ा कीना और जलन को ख़त्म कर देता है

(काफ़ी, जिल्दः5, सफ़हाः144)

रहम करो

हज़रत मुहम्मद(स) ने कहाः

ज़लील हुये रिश्तेदार
और फ़क़ीर हुये मालदार पर रहम करो

(काफ़ी, जिल्दः8, सफ़हाः150)

इस किताब में हज़रत मुहम्मद(स.) की कही हुई 40 अनमोल बातें (हदीसें) जमा की गई हैं। अगर हम इन बातों को पढ़ें, समझें और अपनी ज़िन्दगी में उतारें तो ज़िन्दगी की न जानें कितनी मुश्किलें आसान हो जाएँ।

Publisher:

I.Y.O. PUBLICATIONS

Flat No:5, City Centre, Medical College Road, Aligarh - 9259287320
117/P-1/556, Kakadeo, Kanpur - 9336100559
www.imamiayouth.in